ग्राम श्री

प्रश्न १- कवि ने गाँव को हरता जन-मन क्यों कहा है ?
उत्तर १- मानव सुंदरता का उपासक रहा है। गाँव की हरियाली, कुसुमित सुमन, हरी-भरी फसलें, सूर्य की स्वर्णिम किरणें , नीला आकाश, सुगंधित हवा, फूलों पर मंडराती तितलियाँ इत्यादि मिलकर मनोहारी दृश्य उत्पन्न करती है जिसे देखकर जन-मानस मंत्र-मुग्ध होकर उसका रसपान करने लगता है। गाँव की हरियाली, उसकी सुंदरता, उसकी विविधता मानव मन को आसक्त करती है।

प्रश्न २- कविता में किस मौसम के सौंदर्य का वर्णन है ?
उत्तर २- वसंत ऋतु में प्रकृति का सौंदर्य अपनी चरम-सीमा में होता है। वसंत ऋतु में फूलों में रंग, पत्तों पर लावण्य, पेड़ों पर लगी मंजरियाँ तथा हवाओं में सुगंध व्याप्त होती है। कोयल के मीठे गीत, पीली-पीली सरसों, फल-फूल, सब्जियों तथा बहारों का मौसम होता है। कवि ऐसी ऋतु के सौंदर्य से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाता।

प्रश्न ३- गाँव को 'मरकत डिब्बे सा खुला' क्यों कहा गया है?
उत्तर ३- 'मरकत' अर्थात पन्ना, हरे रंग का रत्न या मणि सबको आसक्त करती है। गाँव का सारा वातावरण भी हरा-भरा होता है जिस प्रकार पन्ने का खुला डिब्बा हरियाली युक्त आभा बिखेरता है उसी प्रकार गाँव का हरा-भरा आँचल बेशकीमती अथवा बहुमूल्य रत्न तथा सौंदर्य से युक्त होता है।

प्रश्न ४- अरहर और सनई के खेत कवि को कैसे दिखाई देते हैं ?
उत्तर ४- अरहर और सनई के खेत सुनहरे रंग के होते हैं इसलिए कवि को वो सोने की किंकिणियों के समान दिखाई देते हैं। इसकी फलियाँ सूख कर आभूषण के घुंघरुओं के समान बजने लगती है। इन खेतों की फलियाँ धरती माँ की करघनी के समान सुशोभित होती हैं।

प्रश्न ५- भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) बालू के साँपों से अंकित
गंगा की सतरंगी रेती

(क) गंगा नदी के किनारे की रेट सूर्य की सप्तरंगी आभा से युक्त होकर लहरों के साथ लहराते हुए साँपों जैसी प्रतीत होती है। कवि ने प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन कर अपनी कल्पना को शब्दों का सुन्दर आवरण ओढ़ाया है।

(ख) हँसमुख हरियाली हिम-आतप
सुख से अलसाए-से सोए

(ख) प्रस्तुत पंक्ति का भाव यह है कि वसंत ऋतू में प्रसन्नचित हरियाली सर्दी की धुप में इस तरह आलस्य से युक्त हो गई है कि वह सोती हुई सी जान पड़ती है। प्रकृति के मानवी करण द्वारा कवी ने हरियाली को सुख और प्रसन्नता के ऐश्वर्य से युक्त बताया है। इस ऐश्वर्य में सूर्य का प्रकाश भी निहित है।

प्रश्न ६- निम्न पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है ?

तिनकों के हरे-हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक

उत्तर ६- हरे -हरे = पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार
हिल-हरित = अनुप्रास अलंकार
तिनकों के तन पर = रूपक और मानवीकरण अलंकार

प्रश्न ७- इस कविता में जिस गाँव का चित्रण हुआ है वह भारत के किस भू-भाग पर स्थित है ?

उत्तर ७- इसमें भारत के उत्तरी भाग के अथवा गंगा, यमुना के मैदानों में फैले विस्तृत भू-भाग का कोई भी गाँव हो सकता है।

प्रश्न ८- भाव और भाषा की दृष्टि से आपको यह कविता कैसी लगी ? उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर ८- भाव और भाषा की दृष्टि से यह :-

- कविता सर्वोत्तम है।
- पूरी कविता में प्रकृति का मनोहारी चित्रण किया गया है।
- प्रकृति पर मानवीय क्रियाओं का आरोपण कर कवि ने अपनी अद्‌भुत कल्पना शक्ति का परिचय दिया है।
- भाषा सरल व सुबोध है।
- तत्सम शब्दों का प्रयोग जैसे वसुधा, करधनी इत्यादि का प्रयोग किया गया है।]
- अनुप्रास, उपमा, रूपक, पुनरुक्ति प्रकाश तथा मानवीकरण अलंकार का सफल प्रयोग किया गया है।

प्रश्न ९- आप जहाँ रहते हैं उस इलाके के किसी मौसम विशेष के सौन्दर्य को कविता सा गद्‌य में वर्णित कीजिए।

उत्तर ९- दिल्लीवासी, दिल्ली की गर्मी, सर्दी तथा वर्षा का भरपूर आनंद लेते है, यह अलग बात है कि दिल्ली का कोई अपना मौसम नहीं है। आसपास के राज्यों की जल-वायु अधिक प्रभावित करती है। दिल्ली एक प्रदूषित राज्य है। निस्संदेह भारत का दिल है इसलिए इस महानगर में बड़ी-बड़ी मशीनों के बीच 'मशीनी मानव' भी नज़र आता है। ऐसे में वर्षा की रिमझिम फुहारें जब दिल्ली पर पड़ती है तो पूरी दिल्ली सजी सँवरी दुल्हन की तरह प्रकृति का नवीन आवरण ओढ़कर आने वाली चुनौतियों के लिए स्वयं को तैयार करती है। राष्ट्र मंडल खेलों के उपरांत दिल्ली का निखार अपने पूरे उफान पर है। मुझे अपनी दिल्ली बेहद प्रिय है तथा में इसके सौंदर्य व स्वच्छता के प्रति कृतसंकल्प हूँ।